International Journal of Multidisciplinary Research and Development 2014; 1(2): 146-148

International Journal of Multidisciplinary Research and Development

IJMRD 2014; 1(2): 146-148
www.allsubjectjournal.com
Received: 17-07-2014
Accepted: 31-07-2014
e-ISSN: 2349-4182
p-ISSN: 2349-5979
Impact Factor: 3.762

Dr. Bhagat Singh
Associate Professor, Ancient Indian History, Culture & Archaeology,
Kurukshetra Univeristy, Kurukshetra

Correspondence:
Dr. Bhagat Singh
Associate Professor, Ancient Indian History, Culture & Archaeology,
Kurukshetra Univeristy, Kurukshetra

बौद्ध धर्म के पुरातात्त्विक पुरावशेषः हरियाणा के सन्दर्भ में

Dr. Bhagat Singh

बौद्ध परम्पराओं से ज्ञात होता है कि हरियाणा में बौद्ध धर्म का आरम्भ महात्मा बुद्ध के समय छठी सदी ई. पू. में ही हो गया था। दीर्घ निकाय, अंगुत्तर निकाय, महावस्तु आदि बौद्ध साहित्य में तत्कालीन सोलह महाजनपदों का वर्णन मिलता है, जिसमें बौद्ध धर्म का प्रभाव था।[1] उस समय हरियाणा क्षेत्र कुरू जनपद के नाम से जाना जाता था। साहित्यिक बौद्ध साक्ष्यों से ज्ञात होता है कि महात्मा बुद्ध ने अपने प्रिय शिष्य आन्नद के साथ हरियाणा के विभिन्न स्थलों का भम्रण किया था।[2]

पाणिनी ने अष्टाध्यायी में लिखा है कि भगवान बुद्ध कुरूक्षेत्र में पधारे थे और उन्होंने कुरूक्षेत्र में प्रवचन भी दिया था। बुद्ध काल में कुरूक्षेत्र सोलह महाजनपदों में से एक था। कल्पद्रुम अवादान के अनुसार भगवान बुद्ध ने एक बार कुरूक्षेत्र का भम्रण किया था। श्रीलंका के प्रसिद्ध बौद्ध ग्रंथ दीपवंश में वर्णन मिलता है कि भगवान बुद्ध ने कुरूक्षेत्र की यात्रा की तथा अनोत्तता सरोवर के तट पर भिक्षा प्राप्त की।[3] बुद्ध द्वारा अपनी पद रज्ज से पवित्र किए गए स्थलों में सर्वाधिक चर्चित कम्मासदम्म (कैथल) का नाम आता है। यह कुरू जनपद का महत्वपूर्ण कस्बा था। यहाँ बुद्ध द्वारा अनेक प्रवचन दिए गए। दीर्घनिकाय व मज्झिमनिकाय से पता चलता है कि यह स्थल भिक्षुणी नन्दुतारा व मित्कली का निवास स्थल भी था जिन्होंने महात्मा बुद्ध के संदेश को दूर–दूर तक पहुंचाया था।

दिव्यावदान से पता चलता है कि सम्राट अशोक के शासन काल के दौरान हरियाणा क्षेत्र में बौद्ध धर्म में काफी प्रगति हुई। उस समय हिसार, करनाल, टोपरा, अग्रोहा, थानेसर, कैथल इत्यादि बौद्ध धर्म के प्रमुख केन्द्र थे।[5] इसकी पुष्टी पुरातात्त्विक स्रोतों से भी होती है। इन पुरावशेषों में हरियाणा के विभिन्न पुरास्थलों से मिलने वाले स्तंभ अभिलेख, मूर्तियाँ व स्तूप है।

हरियाणा में बौद्ध धर्म के पुरावशेषों में स्तूपों का विशेष महत्व है। इन स्तूपों के माध्यम से ज्ञात होता है कि प्राचीन समय में यहाँ बौद्ध धर्म में काफी प्रगति हुई।

थानेसर के बारे में हवेनसांग ने लिखा है कि[5] यहाँ सम्राट अशोक द्वारा निर्मित एक स्तूप है जो राजधानी से 4–5 ली दुर उत्तर–पश्चिम में स्थित है। जिसकी ऊँचाई 300 फीट है। स्तूप के निर्माण में प्रयुक्त ईटों का रंग नारंगी था और वे अत्यंत चमकीली थी। यह स्तूप कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय की उत्तर–पूर्व दिशा में स्थित है। कुरूक्षेत्र के प्रसिद्ध ब्रह्म–सरोवर के पश्चिमी तट पर बने हुए एक टीले की खुदाई से मिले बौद्ध पुरावशेषों से कुरूक्षेत्र की धार्मिक महत्ता का पता चलता है।[6] पुरातत्त्वविद् कनिंधम के विवरण से इस स्तूप तथा इस स्थान से 4–5 ली दुर थानेश्वर का पता चलता है। हवेनसांग ने अपने यात्रा वृतांत में थानेश्वर में तीन बुद्ध विहार बताए हैं। इसी आधार पर कनिंधम ने इन्हें पहचाना। दुसरा स्तूप थानेश्वर के उत्तर–पश्चिम में मदरसा टीला के समीप बताया है। सन् 1976–77 में इस बुद्ध विहार और स्तूप की पहचान की गई और पाया गया कि यह धम्म चक्र के अनुरूप बना है। यह स्थान सरस्वती नदी के किनारे हर्ष टीले के उत्तर–पश्चिम में एक किलो मीटर की दुरी पर स्थित है।[7] यह स्तूप 4–6 फुट ऊँचा था। यहां पक्की ईटों से बना एक 6ग्6 मी. का तालाब भी मौजूद था। हवेनसांग ने इसे अशोक द्वारा निर्मित बताया है। हवेनसांग द्वारा बताए गए बुद्ध विहार की पहचान कुरूक्षेत्र–कैथल रेलवे लाईन के पास की गई है। 1972 में इस विहार को निर्माण कार्य के दौरान यहां से हटा दिया गया था।[8] हवेनसांग ने एक तीसरे बौद्ध स्तूप का वर्णन किया है, जो आधुनिक समय में ब्रह्म सरोवर के किनारे पर स्थित है यहां बौद्ध स्तूप व बुद्ध विहार साथ–साथ है। इस स्तूप की दीवारें काफी लम्बी है जो 200 मी. तक दिखाई पड़ती है।

हवेनसांग के यात्रा विवरण से हमें यमुनानगर में स्थित 'स्रुघ्न' आधुनिक नाम सुघ का भी वर्णन मिलता है। जो जगाधरी के समीप यमुना नदी के किनारे स्थित है।[9] राजधानी के दक्षिण–पूर्व में यमुना के पश्चिमी तट पर एक बृहद संघाराम के पूर्वी–द्वार के बहार एक स्तूप था, जिसे सम्राट अशोक द्वारा निर्मित करवाया गया था। महात्मा बुद्ध ने यहां धर्मोपदेश दिया था तथा ऐसा माना जाता है कि सारिपुत्र व मोद्गल्यायन की मृत्यु बुद्ध से पहले हो गई थी उन्हीं की स्मृति में यहां स्तूपों का निर्माण किया गया।[10] इस स्तूप के निकट एक अन्य स्तूप में महात्मा बुद्ध के केश व नख सुरक्षित थे। तथागत के महापरिनिर्वाण के पश्चात इस राज्य के लोग तीर्थिकों के विश्वास में आकर अन्य धर्म को मानने लगे तथा सत्य एवं विश्वास से विमुख हो गए।

यमुनानगर जिले के चनेटी गांव में एक विशाल बौद्ध स्तूप है। यह स्तूप लगभग एक मील क्षेत्र में फैला हुआ है तथा अण्डाकार है। इस स्तूप के बारे में मान्यता है कि यह हरियाणा का सबसे बड़ा स्तूप है। इसका निर्माण सम्भवतः सम्राट अशोक द्वारा करवाया गया था। हवेनसांग[11] के अनुसार भगवान बुद्ध स्वयं यहां आए थे और उन्होंने लोगों को बौद्ध धर्म में दिक्षित किया था। इस स्तूप की ऊंचाई 27.10 मी., कर्ण 90.10 मी. ऊपर से प्रदक्षिणापथ की चौड़ाई 1 मी. 60 से.मी तथा निचे प्रदक्षिण पथ की चौड़ाई 3.65 मी. है। इस बौद्ध स्तूप के आस–पास आदि बद्री जैसे अनेक प्रसिद्ध धार्मिक बौद्ध स्थल है। इस स्तूप की महत्ता से पता चलता है कि हरियाणा प्राचीन काल में बौद्ध धर्म का प्रसिद्ध केन्द्र रहा है।

अग्रोहा हरियाणा राज्य के हिसार जिले में स्थित है। अग्रोहा प्राचीन काल में तक्षिला से मथुरा जाने वाले मार्ग पर स्थित होने के कारण इसका व्यापारिक महत्त्व रहा है।[12] दिव्यावदान और विनयपिटक से पता चलता है कि महात्मा बुद्ध ने आन्नद के साथ अग्रोहा की यात्रा की थी। प्राचीन काल में अग्रोहा प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्र था, यहां से मुल्तान व मथुरा तक व्यापारी जाते थे। द्वितीय नगरीकरण के दौरान अग्रोहा प्रसिद्ध बौद्ध केन्द्र बना, जिसकी पुष्टी पुरातात्त्विक एवं साहित्यिक स्रोतों से भी होती है। इस पुरास्थल का सर्वप्रथम उत्खनन 1938–39 में एच.एल. श्रीवास्तव द्वारा किया गया, तथा 1978 से 1982 तक इस पुरास्थल का पुर्नउत्खनन पुरातत्त्व एवं संग्रहालय विभाग हरियाणा के निदेशन में हुआ।[13] साहित्यिक ग्रंथ चुलवग्ग से ज्ञात होता है कि प्राचीन काल में अगलपुरा (अग्रोहा) औदुम्बर शासकों की राजधानी थी। ऐसा माना जाता है कि सम्राट अशोक ने यहां स्तंभ लेख खुदवाया जिसे बाद में सुल्तान फिरोजशाह तुगलक के आदेश से हिसार व फतेहाबाद में स्थापित किया गया। आधुनिक उत्खनन से यहां चतुर्थ ई. पू. से चौदहवीं ई. तक के पुरावशेष मिले है। अग्रोहा में बौद्ध धर्म के प्रमुख पुरावशेषों में स्तूप है जिसे छठी व सातवीं सदी ई. का माना जाता है।[14] इस प्रकार अग्रोहा में बौद्ध धर्म से सम्बन्धित विभिन्न महत्त्वपूर्ण पुरावशेषों की प्राप्ति हुई है।

असंध प्राचीन काल में महत्त्वपूर्ण बौद्धिक केन्द्र रहा है। यहां पर एक स्तूप होने के साक्ष्य देवेन्द्र हाण्ड़ा[15] द्वारा दिए गए है। यह स्तूप कुषाण कालीन है तथा यहां से अनेक महत्वपूर्ण पुरावशेषों की प्राप्ति हुई है। इस स्तूप को स्थानीय लोग जरासंध का किला मानते हैं, इसकी ऊंचाई 25 मी. से भी अधिक है। इस स्तूप के समीप से कुषाण–कालीन सिक्के, मद्भाण्ड़ तथा अन्य पुरावशेषों की प्राप्ति हुई है।[16]

आदिब्रद्री यमुनानगर से उत्तर में 40 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यहां से प्राचीन बौद्ध स्तूप, बौद्ध विहार एवं मूर्तियों की प्राप्ति हुई है। वर्ष 2003 में भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा इस पुरास्थल पर कार्य किया गया। यहां से उत्खनन के दौरान अस्थि कलश, मृद्भाण्ड़, शंख, कौड़ी तथा पत्थरों का समूह आदि पुरावशेषों की प्राप्ति हुई है। उत्खनन के दौरान इस स्तूप को काल क्रमानुसार चार भागों में विभाजित किया गया। स्तूप की परिधि 11 मी. है जिसके मध्य भाग में 3ग3 मी. की केन्द्रीय नली है। इस बुद्ध विहार की उत्तर दिशा में एक सभागार है तथा पूजा कक्ष भी बना है। इनमें पूजा के लिए बुद्ध मूर्तियां रखी जाती थी।[17]

बौद्ध धर्म से सम्बन्धित पाषाण वेदिका व मूर्तियाँ अनेक पुरास्थलों से प्राप्त हुई हैं। भूना एक टीले पर बसा हुआ गांव है, जो फतेहाबाद जिले में स्थित है। इस टीले की ऊंचाई लगभग 25 मी. है। 1984–85 में यहां हरियाणा पुरातत्त्व विभाग द्वारा खुदाई की गई। इस दौरान यहां से स्तूप की रेलिंग पर लगने वाले पत्थर की प्राप्ति हुई जो दोनों तरफ से उकेरा गया है। इसे वेदिका कहा जाता है यह दो भागों में विभाजित है। यह वेदिका कुषाण कालीन है।[18] हथीन पलवल जिले के दक्षिण–पश्चिम में स्थित एक छोटा सा गांव है। यहां से प्राचीन बौद्ध स्तूप होने के प्रमाण मिलते हैं, जिसकी ऊंचाई लगभग 30 फीट है। यहां से प्राप्त पुरावशेषों में प्रमुख वस्तु पाषाण वेदिका है, जो शुंग कालीन है। हरियाणा में शुंग कालीन किसी स्तूप की प्राप्ति नहीं हुई है, लेकिन हथीन तथा भादसा से मिले स्तूप के रेलिंग अवशेष इसे अपरोक्ष रूप से शुंग कालीन प्रमाणित करते हैं। लेकिन यह भी संम्भव है कि यहां कुषाण काल में स्तूप बनाया गया होगा।[19]

अमीन गांव थानेसर से 8 कि.मी. द.पू. में स्थित है। यहां से दो प्रस्तर खण्ड़ों की प्राप्ति हुई है,[20] जिन पर पद्मासन मुद्रा में बैठे हुए एक पुरूष की आकृति दर्शायी गई है। जिसका दायां हाथ अभय–मुद्रा में उठा हुआ है तथा बायां हाथ से कुण्ड़िका को पकड़े हुए अंकित किया गया है। उभय मुद्रा में उठे दाहिने हाथ की हथेली पर चक्र का अंकन इसे बौद्ध होने का संकेत देता है। वस्त्र, कर्ण–कुण्ड़ल तथा कण्ठाहार पहने यह उभय मुद्रा किसी मैत्रेय बुद्ध की भी मानी जा सकती है।

बौद्ध साहित्य में कम्मासदम्म निगम का वर्णन कई जगह मिलता है। यह स्थान अब कम्मासपुर के नाम से जाना जाता है[21] जो सोनीपत जिले में मुरथल के समीप स्थित है। यहां से बुद्ध की कई महत्वपूर्ण मूर्तियों की प्राप्ति हुई है, जो कुरूक्षेत्र के श्रीकृष्ण संग्राहालय में संरक्षित है। झज्जर से मिली बुद्ध की प्रतिमाएं अपना विशेष महत्त्व रखती है, ये मूर्तियाँ कुषाणकालीन तथा गांधार कला शैली में निर्मित है। ये मूर्तियाँ पंचकुला संग्रहालय में संरक्षित है। कुछ महत्वपूर्ण बुद्ध प्रतिमाएं झज्जर गुरूकुल के संग्रहालय में रखी गई है। रोहतक के खोखराकोट से भी नींव खोदते समय दो बौद्ध मूर्तियों की प्राप्ति हुई है, ये लाल पत्थर से बनी हुई हैं, तथा इनमें से एक प्रतिमा पर बुद्ध को ध्यान–मुद्रा में दर्शाया गया है।[22] रोहतक जिले के कुछ अन्य पुरास्थलों से भी बौद्ध धर्म से सम्बन्धित पुरावशेष प्राप्त हुए है। भगवानपुर से प्राप्त एक लाल पत्थर पर बुद्ध को आसीन मुद्रा में दिखाया गया है जिस पर ब्राह्मी लिपि में बुद्धा कनक मुनि अंकित है। पैर के निचे एक धम्म चक्र तथा नंदी पाद बना हुआ है। रोहतक जिले के सांधी गांव से बुद्ध की एक प्रतिमा प्राप्त हुई जिसमें महात्मा बुद्ध की मुखाकृति मुस्कराती हुई मुद्रा में है।[23]मौर्य कला के अन्तर्गत पाषाण स्तम्भों व मूर्तियों से भी बौद्ध धर्म की पुष्टि होती है। पाषाण स्तम्भों पर उत्कीर्ण लेखों से प्राचीनकाल की सामाजिक व धार्मिक स्थिति का पता चलता है। मौर्य शासक अशोक के अभिलेख हरियाणा में विभिन्न स्थानों से प्राप्त हुए है जिन पर धम्म लिपियां अंकित है। इसी प्रकार का एक स्तम्भ हिसार के गुजरी महल में विद्यमान है। इसे अत्यधिक ऐतिहासिक महत्त्व प्राप्त है। इसे अशोक की लाट नाम से जाना जाता है। इस लाट के दो भाग है, निचे का भाग चूने का बना है जबकि ऊपरी भाग लाल पत्थर से बना है। इस पर मौर्य कालीन ब्राह्मी लिपि का अंकन है। इसकी ऊंचाई 10 फीट 10 इंच तथा इसका वृत $8^{1}/_{2}$ फीट है।[24] फतेहाबाद से भी अशोक कालीन एक स्तम्भ लेख की प्राप्ति हुई है जो ईदगाह के बीच में विद्यमान है। इसकी ऊंचाई 5 मी. तथा परीधि 1.9 मी. है। यह स्तम्भ हिसार के स्तम्भ से मिलता जुलता है। इस स्तम्भ पर अशोक द्वारा लिखवायें गए लेख को काट कर उनके ऊपर अरबी भाषा में फिरोजशाह के जीवन सम्बन्धी घटनाएं उत्कीर्ण की गई है।[25] इस स्तम्भ का उपरी भाग 1.5 मी. लाल पत्थर से बना है। भूरे तथा लाल पत्थर के मध्य सफेद संगमरमर की पट्टी लगी है। बौद्ध धर्म से सम्बन्धित अभिलेखों में दिल्ली–टोपरा स्तम्भ का विशेष महत्व है। टोपरा स्थल अम्बाला के समीप स्थित है। प्राचीन काल में सम्राट अशोक द्वारा टोपरा स्तंम्भ को स्थापित करवाया। टोपरा से मिले अभिलेख पर धम्म लिपियाँ अंकित है, इससे अशोक की धम्म नीतियों का पता चलता है।

1365 ई. में सुल्तान फिरोजशाह तुगलक द्वारा इस स्तम्भ को टोपरा से दिल्ली मंगवाया गया। इस स्तम्भ की लम्बाई 42 फीट 7 इन्च है। अशोक द्वारा निर्मित स्तम्भों की औसतन ऊंचाई 50 फीट तथा परिधि 50 इन्च है तथा इनका वजन 50 टन के बराबर

है।[26] इन स्तम्भों को निर्मित करवाने का प्रमुख उद्देश्य धम्म प्रचार करना था।

पलवल के ढेर मोहल्ला स्थान से खुदाई के दौरान अनेक प्रतिमाओं की प्राप्ति हुई है। यहां से कमल के फूल वाली पाषाण मूर्तियां भी प्राप्त हुई है जो बौद्ध धर्म से सम्बन्धित है, क्योंकि बौद्ध धर्म में कमल का अत्याधिक महत्त्व था। अहरवां गांव पलवल जिले से 10 कि.मी. की दूरी पर दक्षिण–पश्चिम में पलवल हथीन रोड़ पर स्थित है। अहरवां गांव से बुद्ध की लाल पत्थर से बनी एक मूर्ति प्राप्त हुई है जिसकी ऊंचाई 120 से.मी. चौड़ाई 100 से. मी. तथा मोटाई 49 से.मी. है।[27] यह मूर्ति कुषाण कालीन है। यहां से प्राप्त पुरावशेषों में यक्ष–यक्षियों की प्रतिमाएं, बौद्ध स्तूप की वेदिका का भाग तथा अनेक हिन्दू देवी–देवताओं की प्रतिमाएं प्राप्त हुई है। अहरवां से मिट्टी की बनी एक महत्वपूर्ण मोहर मिली है इस मोहर पर ब्राह्मी के चार शब्द मिलते है, जो लगभग 200 ई. पू. के है। इस मोहर पर 'श्रामणेर' लिखा है। संस्कृत में श्रामणेर का अर्थ है साधु, धार्मिक व्यक्ति।[28] इस प्रकार इस मोहर पर अंकित वर्णों से यही निष्कर्ष निकलता है कि अहरवां पुरास्थल बाईस सौ वर्ष पहले बौद्ध धर्म का महत्त्वपूर्ण केन्द्र था। इस प्रकार हरियाणा से प्राप्त होने वाले विभिन्न पुरातात्त्विक साक्ष्यों से प्राचीन काल में बौद्ध धर्म की प्रबलता का ज्ञान होता है, जो मौर्य, कुषाण व हर्ष काल में अपनी चरम सीमा पर था।

सन्दर्भ सूची

1 फाऊसबाल, बी.एन., दाँ जातका, 537, 1963 लंदन
2 दिव्यादान, पृ. 45
3 सिंह, लाल, बुद्ध भूमि हरियाणा, 2008, पृ. 132
4 भारद्वाज, ओ.पी., स्ट्डीज इन दा हिस्टोरिकल जियोग्राफी ऑफ एन्शियंट इण्ड़िया, 1986, पृ. 159
5 वॉटर थॉमस, हवेनसॉग ट्रेवल इन इण्ड़िया, 1961, प्रथम संस्करण, पृ. 316
6 गेलज, एच.ए., रिर्कोड ऑफ बुद्धिस्ट किंगड़म, कैम्बरीज, 1923, पृ. 19–20
7 सिंह, लाल, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 134
8 कुमार, मनमोहन, किलनिंग ऑफ इंड़ियन आर्कियोलॉजी हिस्ट्री एण्ड़ कल्चर, 2000, पृ. 26–27
9 कनिंधम, आर्केलॉजिकल सर्वे रिर्पोट, वाल्यूम–2, पृ. 26–27
10 वॉटर, थॉमस, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 319
11 हवेनसांग, महाथड़ राजवंश में पश्चिम की तीर्थ यात्रा का वृतान्त, पृ. 118
12 सिंह, लाल, पूर्वनिर्दिष्ट, 2008, पृ. 130
13 एच.एल. श्रीवास्तव, एक्सक्वेंशन एट अग्रोहा, पंजाब, न. 61, संजय कुमार, आर्केलॉजी एण्ड अर्ली हिस्ट्री ऑफ अग्रोहा एण्ड ईट्स एरिया, एम. फिल. लघु शोध 1989, कुरूक्षेत्र, पृ. 22–23
14 कुमार, संजय, उपरोक्त, पृ. 29–30
15 हाण्ड़ा, देवेन्द्र आईडेन्टीफिकेशन ऑफ असन्धिवत्, विश्वेशरानंद इण्ड़ोलॉजिकल जर्नल, होशियारपुर वाल्यूम–3, 1965, पृ. 278–81
16 हाण्ड़ा, देवेन्द्र, कुषाण स्तूप एट असन्ध, हरियाणा रिव्यू चंडीगढ़, जुलाई 1982, पृ. 133
17 सिंह, लाल, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 118
18 कुमार, राजेन्द्र, हिस्ट्री एण्ड़ आर्केलॉजी ऑफ हरियाणा, पी. एचडी. थिसिस 1996, कुरूक्षेत्र, पृ. 57
19 सिंह, लाल, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 159
20 यादव, के.सी., हरियाणा स्ट्ड़ीज इन हिस्ट्री एण्ड कल्चर, कुरूक्षेत्र, 1968, पृ. 21–22
21 यादव, के.सी., हरियाणा इतिहास एवं संस्कृति, 1992, पृ. 184
22 सिंह, लाल, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 167
23 सौजन्यः झज्जर गुरुकुल संग्रहालय
24 हाण्ड़ा, देवेन्द्र, बुद्धिस्ट रिमेन्स, आर्केलॉजी एवं म्यूजिमय विभाग, 1989, पृ.12
25 सिंह, लाल, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 174
26 कनिंधम, आर्केलॉजिक सर्वे रिपोर्ट, वाल्यूम ग्प्ट, पृ. 78–79
27 सिंह, लाल, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 155
28 उपरोक्त, पृ. 156